1

दृष्टि The Vision

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-1

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 **HL-2401**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Karmveer Narwadia

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 1 & 12 July 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]: 0 8 0 5 5 9 6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

42

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर

राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अन्तर प्रयुक्ति स्तर पर अधिक होता है। वस्तुतः राष्ट्रभाषा एक सम्पर्क भाषा की तरह होती है जिसमें देश के अधिकतर लोगों का भावनात्मक और सांस्कृतिक जुड़ाव होता है वही राजभाषा कार्यालय मे प्रयोग में ली जाती है।

राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा में अंतर

(1) राष्ट्रभाषा एक सम्पर्क भाषा के रूप मे प्रयुक्त होती है, अतः विविधता होने पर इसमें लचीलापन संभव है, वहीं राजभाषा में मानकता का समावेशन होता है।

(II) राष्ट्रभाषा तुलनात्मक आसान होती है वही राजभाषा सीखने मे थोड़ी कठिन होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(iii) राष्ट्रभाषा मे कई साहित्यिक प्रवृत्तियाँ मिल जाती है क्योंकि आत्मनिष्ठता की प्रवृत्ति मिल जाती है, वही राजभाषा मे ऐसा होना संभव नहीं है। यह वस्तुनिष्ठ होती है।

(iv) राष्ट्रभाषा में कई सांस्कृतिक शब्दों को समावेशित किया जाता है. वही राजभाषा मे नए शब्द एक भाषावैज्ञानिक ही बना पाते है।

(v) कोई विदेशी भाषा राजभाषा हो सकती है, राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती है।

अतः हम कह सकते है भारत मे लगभग 70% से अधिक लोग हिन्दी को बोलते है, समझते है, यह राष्ट्रभाषा हो सकती है, वही राजभाषा कई राज्यों मे हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भी संभव है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

एक बोली या भाषा को जिन अक्षरों का प्रयोग करके व्यक्त किया जाता है, लिपि कहलाती है। 'हिन्दी' के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है।

देवनागरी लिपि के सुधारों मे तीन काल देखते है, प्रथम 1920-40 के बीच व्यक्तिगत प्रयास तो वही 1940-60 के बीच संस्थागत सुधारों का, तीसरा 1960 से अद्यतन तक चल रहा है।

संस्थागत सुधारो मे काशी नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान प्रमुख है। इसकी स्थापना 1945 ई. मे हुई।

वस्तुतः इनसे पूर्व डॉ श्रीनिवास जी ने सुधारों के क्रम में यह सुझाव दिया कि महाप्राण व्यंजनों को हटाकर उनको अल्पप्राण व्यंजनो के नीचे अवग्रह (ऽ) लगाकर व्यक्त किया जाए।

जैसे - कऽ > ख

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वहीं डॉ गोरखनाथ ने शब्द को अलग-अलग करना प्रारम्भ में लिखने का बल दिया।

जैसे- दीपा > द ी पा

इन दोनों के सुझावों के समावेश का कार्य काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने किया।

→ इसके साथ ही हिन्दी भाषा के व्याकरण के निर्माण के लिए किशोरदास वाजपेयी तथा कामताप्रसाद गुरु को निर्धारित किया।

→ नागरी प्रचारिणी सभा ने अनेक लिपिगत सुधार भी किए।

हम कह सकते हैं एक लिपि अपने शुरु से आज तक सुधारों का क्रम रखती है इसमें काशी नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान प्रमुख है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी ने राष्ट्रभाषा के तौर पर कार्य किया, लोगों को एक सूत्र में बाँधा। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा से राजभाषा की तरफ ले जाने का पहला प्रयास पुरुषोत्तम दास टण्डन जी को जाता है।

पुरुषोत्तमदास टण्डन जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में से एक थे जो आज अनेक लेखकों, कवियों को सहयोग प्रदान करते हैं तथा लाखों विद्यार्थियों ने छात्रवृत्ति ग्रहण की है।

टण्डन जी के प्रयासों से ही गाँधीजी हिन्दी भाषा से जुड़े जिससे उन्होंने वर्धा, अहमदाबाद में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया, तो C. राजगोपालाचारी जैसे नेताओं के प्रयास से वे दक्षिण भारत में भी गए।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद वे "लोक सेवा मण्डल" के सभापति बन गए और हिन्दी के प्रचार-प्रसार को प्रमुखता दी। उन्होंने स्वयं कहा है-

" मैं हिन्दी के प्रचार-प्रसार को राष्ट्रीयता का अंग मानता हूं। राष्ट्रभाषा ऐसी होनी चाहिए जिसमे हरेक व्यक्ति समझ सके।"

टण्डन जी ने अनेक हिन्दी को प्रोत्साहन देने वाली पत्र-पत्रिकाओ तथा एजेन्सियों के साथ कार्य किया तथा उन्हें सहयोग प्रदान किया।

हिन्दी राष्ट्रभाषा के विकास के लिए टण्डन जी आकाश मे चमकते हुए सितारे की तरह है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

लाला लाजपत राय पंजाब मे क्रान्तिकारी गतिविधियों मे संलग्न थे। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान जब विदेशी चीजों का बहिष्कार व स्वदेशी पर बल दिया जा रहा था तब लाला जी ने भाषा के रूप मे (राष्ट्रभाषा हिन्दी को चुना)

लाला जी पंजाब मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे योगदानकर्ता थे। उन्होंने पंजाब शिक्षा संघ की स्थापना का हिन्दी राष्ट्रभाषा को अनिवार्य कर दिया।

वहीं 1886 मे लाहौर मे एंग्लो वैदिक कॉलेज में हिन्दी को सभी विषयों के साथ अनिवार्य कर दिया गया था। जिससे राष्ट्रभाषा का प्रचार-प्रसार हुआ।

लाला जी यह समझते थे कि सम्पूर्ण राष्ट्र को इस समय एकसूत्र मे बंधने की आवश्यकता है, इसके लिए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी ही एकमात्र भाषा हो सकती है।

उन्होंने लोकसेवा मण्डल मे रहते हुए हिन्दी के प्रचार-प्रसार को काफी आगे बढ़ाया।

लाला जी के प्रयास से पंजाब विश्वविद्यालय मे हल व प्रयास के माध्यम से हिन्दी को अनिवार्यता मिली, वही हरियाणा विश्वविद्यालय में भी हिन्दी को स्थान दिया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'गढ़वाली' बोली

पहाड़ी हिन्दी उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों मे बोली जाने वाली बोली है। पहाड़ी हिन्दी मे दो बोली कुमाऊनी तथा गढ़वाली बोली शामिल है।

गढ़वाली बोली पर खस, चीनी, तिब्बती इत्यादि अनार्य भाषा का प्रभाव है लेकिन समय के साथ इनका प्रभाव कम हुआ है और आर्यभाषा ब्रज का प्रभाव पड़ा है।

गढ़वाली बोली टिहरी तथा पौड़ी क्षेत्रों में बोली जाती है, इसमें सानुनासिक स्वर प्रमुखतया से पाए जाते है साथ ही ब्रज की तरह ओकारान्तता भी पाई जाती है (चात्यौं, गयौ). इसके साथ ही स्वरो मे अनुनासिकता की प्रवृत्ति पाई जाती है जैसे जंत्यौं इत्यादि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुल्लिंग एकवचन मे ओ का बहुवचन गढ़वाली मे ऊँ होता है। इसके साथ ब्रज भाषा की तरह संज्ञा का एक ही रूप मिलता है। कारक व्यवस्था मे कर्ता के साथ न, ल. सम्प्रदान व करण के लिए से, ती का प्रयोग किया जाता है। सर्वनाम तथा विशेषण व्यवस्था लगभग ब्रज भाषा की तरह है।

कुमाऊँनी बोली का जिस तरह राजस्थानी का साहित्य मिलता है, उस तरह कोई साहित्य नहीं मिलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भाषा के धरातल पर हिन्दी को अपभ्रंश का अवदान बताइए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश प्राचीन आर्यभाषा संस्कृत तथा आधुनिक हिन्दी के मध्य की कड़ी है। इससे यह निर्धारित है अपभ्रंश की कई सारी विशेषताएँ भाषा के धरातल पर हिन्दी को दी जाती होगी

① मूल प्रवृत्ति

संस्कृत मूलरूप से संयोगात्मक भाषा थी। संयोगात्मक भाषा से वियोगात्मक की प्रक्रिया मे अपभ्रंश का विशेष योगदान है क्योंकि इसी समय कारकीय परसर्ग अलग होने लगे थे।

(II) ध्वनि व्यवस्था मे योगदान

(I) अपभ्रंश मे ही ड़्ह, ढ़ व्यंजनो का लुप्त होने शुरु हो गए थे जो आधुनिक हिन्दी मे भी नही मिलते है।

(II) हलन्त का लोप अपभ्रंश मे शुरु हुआ। जो भी हिन्दी मे देखा जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जगत् > जग

(iii) अपभ्रंश मे विसर्ग का लोप होना शुरू हो गया जो हिन्दी मे दिखता है

दुःख :> दुःख > दुख

(iv) क्षतिपूरक दीर्घीकरण तथा द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति हिन्दी साहित्य मे आज भी देखी जाती है, यह अपभ्रंश से शुरू हुई है।

अद्य > अज्ज > आज

(v) नासिक्य व्यंजनों का अनुस्वार के रूप मे प्रयोग होना अपभ्रंश की देन है

गङ्गा > गंगा

(vi) 'ट' तथा 'ड़' वर्ग भी हिन्दी को अपभ्रंश की देन है

व्याकरणिक संरचना मे योगदान

(i) संस्कृत के तीन लिंगों के स्थान पर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपभ्रंश मे नपुंसक लिंग के शब्द सामान्यतः पुल्लिंग मे शामिल कर लिए गए। यह परम्परा आज भी जारी है

(ii) द्विवचन का लोप होकर ये शब्द सामान्यतः बहुवचन मे शामिल हो गए। यह अपभ्रंश से शुरू होकर आज तक चल रहा है

(iii) अपभ्रंश ने संस्कृत की 'तिङन्त' के स्थान पर कृदन्तीय प्रधान क्रिया व्यवस्था हिन्दी को प्रदान किया।

(iv) कारकीय व्यवस्था मे निर्विभक्तिक प्रयोग का से, का, के इत्यादि प्रयोग शामिल हो गए थे

(v) विशेषण व्यवस्था मे विशेषतया: सार्वनामिक विशेषण तथा संख्यावाचक विशेषण के विकास मे प्रमुख योगदान है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्नीस > वन्नीस

(v) संयुक्त क्रियाओं का विकास भी हिन्दी को अपभ्रंश की देन है
रसतक जाई > रहता जाता है।

शब्दकोशीय प्रवृत्ति

(i) संस्कृत के जटिल शब्दों से सरल शब्द का निर्माण होना शुरू हो गया था।

(ii) तद्भव शब्दों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। अनेक अलग-अलग शब्दों का प्रारम्भ हुआ।
जैसे- किल- किल।

अपभ्रंश ने भाषा व साहित्य दोनों ही स्तरों पर आधुनिक हिन्दी को काफी प्रभावित किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अपभ्रंश' की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश संस्कृत की संयोगात्मक से वियोगात्मकता के बीच की कड़ी है। जिससे वियोग के क्रम मे नए-नए शब्दों का निर्माण हुआ।

इन शब्दकोशीय प्रवृत्ति पर तीन तरीके से प्रभाव देखते हैं-

(i) संस्कृत की जटिल शब्दावली का सरलीकरण होने लगा और अनेक आसान शब्दों का निर्माण होने लगा।
जैसे- गंड्गा > गंगा।
ऋच्या > रिया

(ii) सरलीकरण का प्रभाव यह हुआ कि तद्भव शब्दों का एक भण्डार अपभ्रंश मे जुड़ने लगा। ये तद्भव शब्द तत्सम (मोर) से बनने लगे जिसमे आज, काम इत्यादि प्रमुख है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(iii) शब्दकोशीय प्रवृत्ति मे कई देशज शब्द आने से उनका विकास हुआ। कई ध्वन्यात्मक शब्दों को शब्दकोश मे शामिल किया है।

जैसे- किल- किल।

(iv) विसर्ग तथा हलन्त के लोप से नए- नए शब्द सरलीकृत रूप मे शब्दकोशीय ~~प्रवृत्ति~~ भण्डार को बढ़ने लगे।

जैसे- जगत् > जग
गुरु: > गुरु

(v) क्षतिपूरक तथा दित्वीकरण की प्रवृत्ति ने दीर्घीकरण कई शब्दों को शब्दकोश मे जोड़ा।

जैसे- अद्य > अज > आज, काम इत्यादि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अतः हम कह सकते हैं अपभ्रंश आर्यभाषा संस्कृत के विकास मे अहम् भूमिका रही है जिससे उससे शब्दों का सरलीकरण होकर शब्दकोशीय प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली गद्य के विकास में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना 1801 मे हुई थी। इसकी स्थापना के पीछे मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सिविल सेवा प्रशिक्षण प्रदान करना था।

प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए इस कॉलेज के प्रिंसिपल के रूप मे नियुक्ति जॉन गिलक्रारस्ट की हुई। गिलक्रारस्ट यह समझते थे सिविल सेवकों का प्रशिक्षण हिन्दी मे करने पर ये भारत मे शासन व्यवस्था सही चला पाएंगे क्योंकि उर्दू कुछ मुसलमान तथा कुछ ज्यादा पढ़े लिखे हिन्दू बोलते थे। ज्यादातर लोगों की प्रमुख भाषा हिन्दी ही थी।

इस क्रम मे जॉन गिलक्राइस्ट के साथ सदा सुखलाल, इंशा अल्ला खाँ, सदल मिश्र इत्यादि सदस्य जुड़े।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इंशा अल्ला खाँ ने भाषा को तीन प्रकार से विभाजित किया

- बाहर की बोली — उर्दू / फारसी
- गँवारी — ब्रज / अवधी
- भाखा — संस्कृत

ये हिन्दी को बिना उर्दू, फारसी पर बल दे रहे थे। इसी क्रम मे फोर्ट विलियम कॉलेज द्वारा अनेक शब्दों का निर्माण किया गया।

लल्लू लाल ने 'यामिनी घोड दिल्ली आगरे की खड़ी बोली को प्राथमिकता दी।

सदल मिश्र ने पूर्वी बोलियो के साथ हिन्दी को आगे बढ़ाया। वही सदा सुखलाल ने पूर्वी व पश्चिमी हिन्दी को साथ में समायोजित किया।

इन चारों के प्रयास से एक सन्तुलित हिन्दी का विकास हुआ जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रशिक्षण मे प्रयुक्त की जा सकती हो। जिससे लोग उससे जुड़ाव महसूस कर सके। लोगों के बाते समझने मे आसानी हो। फोर्ट विलियम कॉलेज हिन्दी अनुवाद तथा प्रशिक्षण मे बखूबी कार्य किया।

फोर्ट विलियम कॉलेज के कई ~~लोगों~~ प्रशिक्षणप्राप्त कृतियों ने हिंदी साहित्य मे लेखन कार्य भी किए है।

हम कह सकते है हिंदी साहित्य के विकास मे 19वी सदी मे विकास क्रम मे फोर्ट विलियम का बड़ा योगदान था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ

भारत मे अनेक जगह से बोली को 8वी अनुसूची मे भाषा के दर्जा के लिए मॉंग उठ रहे है। जैसे राजस्थानी भाषा, भोजपुरी भाषा।

सर्वप्रथम बोली को भाषा का दर्जा देने के लिए उपयुक्त कसौटियां देख लेनी चाहिए -

(1) उस बोली के लिए एक लिपि की उपलब्धता हो।

(2) ~~भाषा~~ बोली प्रयोक्तावर्ग काफी ज्यादा हो।

(3) उस बोली में साहित्य की रचना पर्याप्त हुई हो।

(4) वह बोली वस्तुनिष्ठ न होकर सब्जेक्टिव हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) बोली वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली योग्य लिपि रखती हो।

(6) प्रयोक्ता वर्ग को अपनी बोली पर गर्व होना चाहिए।

(7) बोली को भाषा मे दर्जा राजनीतिक दबावों मे ना दिया जाए।

उपर्युक्त कसौटियों के आधार पर किसी बोली को भाषा के रूप मे मान्यता देने पर परखा जा सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राजभाषा हिंदी और देवनागरी अंक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजभाषा हिन्दी मे हिन्दी का वह रूप जो हिन्दी कार्यालयी प्रयोग मे लिया जाता है, देवनागरी अंक भी लिए जाते है।

वस्तुत: हिन्दी सम्पर्क भाषा तथा राष्ट्रभाषा है लेकिन कार्यालयी परम्परा के लिए राजभाषा का प्रयोग लिया जाता है जिसमे क्लिष्टता अधिक होती है। जैसे- अनुलग्नक, संलग्नक इत्यादि।

देवनागरी अंको का प्रयोग करके कार्यालयी कार्य किए जाते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विकारी और अविकारी पद

जब कोई शब्द व्याकरणसम्मत नियमों के भाषा पर स्थान ग्रहण करता है तो पद कहलाता है।

दो प्रकार
- विकारी
- अविकारी

विकारी पद

विकारीतत्वक पदों से परिवर्तनशील

- संज्ञा (किसी वस्तु, व्यक्ति, भाव का बोधक)
  - जातिवाचक
  - व्यक्तिवाचक
  - भाववाचक
- सर्वनाम (संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले)
  - पुरुषवाचक
  - सार्वनामक
  - निश्चयवाचक
  - अनिश्चयवाचक
- क्रिया (कुछ होने या करने का बोध)
  - अकर्मक
  - सकर्मक
- विशेषण (संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताने वाले)
  - गुणवाचक
  - परिमाणवाचक
  - संख्यावाचक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अविकारी पद

विकारोत्पादक तत्वों से अप्रभावित रहती है

क्रिया विशेषण — धीरे चलना

संबंध बोधक — के लिए, के बिना

योजक — और, वह

विस्मयादि बोधक — ओ

विकारी पद तथा अविकारी पद साहित्य मे महत्वपूर्ण होते है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संत-साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

संत साहित्य भक्तिकाल का प्रथम धारा का साहित्य है जिसमे कबीरदास, मलूक दास तथा असम से शंकर देव तथा पंजाब से गुरुनानक जी आते है।

संत साहित्य के कवियों की सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी है क्योंकि ये कवि प्राय: घुमन्तू थे जिससे उनकी भाषा मे कई जगह की भाषा का समावेशन होता है।

खड़ी बोली का पुट कबीर के साहित्य से दिखता है जहाँ वे कहते है

जो बिछुड़े है पियारे से, भटकते दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममे, हमन को इन्तजारी क्या।

इसमे दर-बदर जैसे फारसी प्रयोग छोड़ दे तथा न का प्रयोग छोड़ दे तो खड़ी बोली का काव्य दिखता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर रस धारा के प्रवर्तक थे
कबीर के बाद रस धारा मे मलूक
दास भी कहते है

"अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।

इसी प्रकार रीति काल मे भी कई
कवियों ने खड़ी बोली का प्रयोग
किया है।

अतः हम कह सकते है सन्त साहित्य
मे खड़ी बोली का प्रयोग शब्दो के
स्तर पर (?) हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'राजस्थानी हिंदी' के प्रमुख साहित्यकार

राजस्थानी हिन्दी मे अनेक बोलियाँ
जैसे मारवाड़ी, मालवी, मेवाती, ढूंढाड़
इत्यादि आती है। लेकिन साहित्यकार के तौर
पर अनेक कवि और लेखक प्रसिद्ध रहे है।

- वीरगाथा मे सूर्यमल्ल मिश्र का नाम
राजस्थानी साहित्य मे लिया जाता है।
- विजयदान देथा को साहित्य पुरस्कार
से सम्मानित किया जा चुका है।
- कन्हैया लाल सेठिया ने 'धरती
धोरा री' का लेखन कार्य कर राजस्थान
की जमीन व टीलों की प्रशंसा की है।
- चन्दरबरदाई द्वारा पृथ्वीराजरासो
भी राजस्थानी साहित्य मे चार चाँद
लगा जाते है। यह एक प्रमुख महाकाव्य
- नजर आता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* मुहणोत ने 'नैणसी री ख्यात' का लेखन कार्य किया है जिसमें राजस्थान की सांस्कृतिक विशेषता को दिखाया गया है

* मीरा भी राजस्थानी साहित्य मे प्रमुख है जो भक्तिकाल की कवयित्री थी, कृष्णभक्ति के पदों की रचना की।

* दादू भी राजस्थान से जुड़े हुए थे जो भक्तिकाल के समय रचना कर रहे थे

राजस्थानी हिन्दी के अनेक साहित्यकार पैदा हुए, तभी तो आज राजस्थानी हिन्दी के लिए 8वी अनुसूची की माँग उठ रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) खड़ी बोली के उदय एवं विकास में कौन-से तत्त्व सक्रिय रहे हैं? विवेचन कीजिये। 20

19वी सदी मे खड़ी बोली का उदय तथा विकास हुआ इसे दो तरीके से देख सकते है। ऐसा क्या हुआ जो ब्रज को खड़ी बोली ने प्रतिस्थापित किया तथा खड़ी बोली मे ऐसे कौनसे अवयव थे जो यह प्रतिस्थापन कर सका।

(i) आधुनिकता का आगमन

आधुनिकता के आगमन से कोमल अनुभवों का दौर समाप्त हो गया, और औद्योगीकरण का दौर शुरु होगया था। इस समय ब्रज की कोमलकांत पदावली साहित्य मे नहीं प्रयुक्त हो सकती जिससे ब्रज भाषा प्रतिस्थापित हो गई और खड़ी बोली का उदय हुआ जो कठोर थी।

(ii) प्रेस का आगमन

स्वतंत्र आंदोलन के दौरान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उदन्त मार्तण्ड जैसे साप्ताहिक पत्र छपने लगे जिससे हिन्दी भाषा में खड़ी बोली का उदय हुआ। इसके साथ ही भारतेन्दु की पत्रिकाएँ वचनसुधा प्रतापनारायण मिश्र का ब्राह्मण तथा बालकृष्णभट्ट का हिन्दी प्रदीप ने खड़ी बोली का प्रसार किया।

(iii) फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना

1801 मे इसकी स्थापना के बाद इसके प्रिंसिपल जॉन गिलक्राइस्ट ने हिन्दी को प्रमोट किया। इसमे सदासुखलाल, सदल मिश्र, इंशाअल्ला खाँ इत्यादि को इन्हें सपोर्ट मिला। गिलक्राइस्ट मानते थे कि खड़ी बोली ही भारत मे 80-90% लोग समझते है।

(iv) ईसाई मिशनरियों का योगदान

ईसाई मिशनरियो ने अंग्रेजी/या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भाषा से खड़ी बोली में अनुवादित किया तथा लोगों को शिक्षा के लिए जागृत किया। जिससे हिन्दी को आगे बढ़ने मे सहायता प्राप्त हुई।

(v) स्वतंत्रता आंदोलन मे

नेताओ महात्मा गाँधी, C.राजगोपालाचारी, लाला लाजपत राय इत्यादि ने अपने राष्ट्रीय आंदोलन मे खड़ी बोली को आगे बढ़ाया। गाँधीजी ने तो सभाएँ की। दक्षिण मे हिन्दी का प्रचार किया।

(vi) सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन

केशवचन्द्र सेन, राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, दयानन्द स्वामी इत्यादि ने अपने -अपने पत्रों- पुस्तकों मे खड़ी बोली को सपोर्ट किया। द.स्वामी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' का लेखन हिन्दी मे ही किया है।

(vii) लोगों मे जागृति

जनता अपनी समस्याओं के प्रति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जागरूक होने से पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ना शुरू कर दिया जिससे लोग खड़ी बोली को आगे ले जाने लगे।

हम कह सकते हैं कि 19वी सदी तथा 20वी सदी खड़ी बोली के उदय तथा विकास का मुख्य समय था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास पर प्रकाश डालिए। 15

ज्ञान-विज्ञान को सहजता तथा समेटने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। व्यवसायिक शिक्षा मे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का निर्माण हिन्दी साहित्य मे लगभग 200 वर्ष पुराना है।

(i) सर्वप्रथम 1810 मे लल्लू लाल जी ने 350 शब्दों की अंग्रेजी व फारसी का हिन्दी मे प्रतिरूप प्रदान किया।

(ii) पण्डित लक्ष्मी शंकर मिश्र ने भी कई तकनीकी विषयों तथा व्यवसायिक शिक्षा पर पुस्तकों का लेखन कार्य किया।

(iii) भारतेन्दु, गुलेरी इत्यादि ने विज्ञान तथा व्यवसायिक शिक्षा से जुड़े शब्दों का विकास किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(iv) डॉ रघुवीर ने 1952-1954 में चार भाषाओं में हिन्दी, तमिल, तेलगू, कन्नड़ में तकनीकी शब्दों का कोश प्रकाशित किया जिसमें वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्द थे

(v) भारतीय मूल के वैज्ञानिक जयन्त हॉली नार्लिकर ने कुछ तकनीकी शब्दों का प्रयोग अपनी स्पेस से संबंधी पुस्तकों में किया।

(vi) इसके साथ ही कई लेखकों ने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी से हिन्दी में अनुवादित कर तकनीकी तथा शब्दावली को समृद्ध किया।

डॉ सेठी - रासायनिक गणनाएँ।

दरअसल व्यावसायिक शिक्षा के लिए

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समस्याएँ तकनीकी व वैज्ञानिक शब्दावली की नहीं है बल्कि मनोवृत्ति की है हिंदी भाषा भी इतनी समृद्ध है कि वह व्यवसायिक शिक्षा को प्रदान कर सके।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक तौर पर विभिन्न बोलियों में परस्पर संबंध रहता है क्योंकि इन बोलियों की उत्पत्ति का स्रोत तो आर्य भाषा संस्कृत ही रही है।

लिंग के स्तर पर

खड़ी बोली मे पुल्लिंग से स्त्रीलिंग के लिए आनी, ई, अन प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे- देवरानी। वही अवधी मे प्रायः इन का प्रयोग किया जाता है।

हालांकि बात को खड़ी बोली मे पुल्लिंग अवधी मे स्त्रीलिंग माना गया है।

वचन के स्तर पर

दक्खिनी हिन्दी मे एकवचन से बहुवचन के लिए ऑ, अन, आन प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है जैसे - बातॉं, जनन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वही ब्रज भाषा मे अन का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- घोड़ा > घोड़न

खड़ी बोली घोड़ा > घोड़े

कारकीय

	ब्रज	अवधी	खड़ी बोली
कर्ता-	ने, नै	×	ने
अधिकरण-	पै	पर	पे
करण, आपादान	से, सेंति	से	से
संबंध	कौ, के	कौ, कै	का, के की

सर्वनाम

आधुनिक हिन्दी मे मुख्यतः तीन सर्वनाम ये, वे, कौन इत्यादि ब्रज भाषा से आए है।

विशेषण

हिंदी मे विशेषण सामान्यतः खड़ी बोली से लिए गए है। अवधी में कम्हारियाँ लेती लड़कियाँ पिकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

क्रिया संरचना

वर्तमान काल- त रूप - रहत, बहत

भूत काल - चाल्यौ, होगो (ब्रज) होयू, देहू (अवधी)

कई संयुक्त क्रियाओं के स्तर पर भी हिन्दी की बोलियाँ आपस मे जुड़ी हुई दिखती है।

सरलीकरण के प्रयास मे जिस बोली से जो अच्छा लगा उसे आधुनिक हिन्दी मे शामिल कर लिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण हेतु उपयुक्त नीतियों का निर्धारण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयोजनमूलक भाषा के रूप मे हिन्दी का अर्थ है- हिन्दी का प्रयोग व्यवहारिक तौर पर भिन्न-भिन्न प्रयोजनों के लिए किया जाता है। डॉ भोलानाथ तिवारी ने हिन्दी के व्यवहारिक प्रयोजनों को देखते हुए इसे 7 भागों मे विभाजित किया है।

(i) सामान्य- बोलचाल मे

इसमें बोलचाल की भाषा मे प्रयोग मे लिया जाता है। हिन्दी को वर्तमान में आज भी लगभग 70-80% लोग बोलचाल मे प्रयोग लेते है। हिन्दी तो भारत के बाहर मॉरिशिश, फिजी मे भी बोलचाल के लिए प्रयोग मे ली जाती है। इस अर्थ में हिन्दी काफी अधिक मात्रा मे प्रयोग मे ली जाती है।

(ii) वाणिज्यिक हिंदी

इसका अर्थ है हिन्दी का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व्यापार के उद्देश्यों के लिए किया जाता है। जैसे सर्राफा, सोने के भाव मे गिरावट, लाखों मे तेजी। इसका प्रयोग भी हिन्दी किया जाता है।

(iii) कार्यालयी हिन्दी

यह हिन्दी सामान्यतः सरकारी कार्यालयों मे पत्रों की भाषा होती है यह हिन्दी वर्तमान मे भी स्थिर ही है। क्योंकि इसमें वस्तुनिष्ठता होती है।

जैसे- संलग्नक, अनुलंग्नक।

(iv) तकनीकी हिन्दी

अभियांत्रिकी तथा औद्योगिक प्रयोगों के लिए प्रयोग मे ली जाने वाली हिन्दी को तकनीकी हिन्दी कहते है यह हिन्दी पहले से काफी सीमित हो गई है। हाल ही गुजरात के अभियांत्रिकी कॉलेज मे अंग्रेजी की किताबों को हिन्दी मे अनुवादित किया गया तो किताबे काफी क्लिष्ट हो गई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(v) शास्त्रीय / अकादमिक हिन्दी

किसी विषय विशेष मे प्रयुक्त होने वाली वह पारिभाषिक शब्दावली जिसका अर्थ निश्चित होता है

जैसे- इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन।

(vi) रोमन हिन्दी के रूप मे

अंग्रेजी को रोमन हिन्दी के रूप मे लिखा जा रहा है जो सोशल मीडिया के आने से काफी जल्दी आगे बढ़ रहा है।

क्या हुआ? | Kya Hua ?
मैंने खाना खा लिया | Maine Khana Kha liya.

(vii) तकनीकी विषयों मे

इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, डॉक्टर जैसे विषयों में हिन्दी आज भी निकृष्ट स्तर पर प्रयोग मे ली जा रही है।

हिन्दी का प्रयोग मूल्यात्मक से ज्यादा मात्रात्मक ज्यादा रहा है प्रयोजनमूलक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के रूप मे हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए सुझाव

① शब्दावली पर ध्यान देना चाहिए।

② अंग्रेजी तथा कई अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के शब्द जो हिन्दी मे समान ही प्रचलित है स्वीकारा जाना चाहिए।

③ अनुवादक को विशेषतयता: सें इसका पालन करना चाहिए।

प्रयोजनमूलक के रूप मे हिन्दी काफी आगे चल रही है लेकिन कुछ क्षेत्र जैसे तकनीकी शिक्षा इत्यादि मे अब भी पीछे है। अतः इन पर ध्यान दिया जाना चाहिए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

साहित्यिक भाषा के रूप मे उषा-अनिरुद्ध जैसे प्रेमाख्यान संस्कृत भाषा मे लिखे जा रहे थे लेकिन 15वी शताब्दी में प्रेमाख्यानों के लिए अवधी भाषा रूढ़ सी हो गई, जिसका प्रमुख कारण सूफी कवियों ने अवधी मे अपने पूर्णतः प्रचलित प्रेमाख्यानों को प्रारम्भ कर दिया।

सूफी काव्यधारा मे अवधी मे पहली रचना मुल्ला दाउद की 'चन्दायन' दिखती है जिसने एक क्षण मे लोकभाषा अवधी को साहित्यिक भाषा में बदल दिया। स्वयं दाउद इसके प्रणयन मे लिखते है-

दाउद कवि सो चंदा गाई
जेइ रे सुना सो गा मुरझाई

इस परम्परा के बाद कुतुबन की मृगावती आती है, और फिर इस परम्परा को ऊपर तक पहुँचाने मे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जायसी की पद्मावत को जाता है

जायसी जी ठेठ अवधी का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं पूर्वी प्रयोग किए है जैसे (पृथ्वी > पुहुमी, दिनम > दिनला)। इन्होंने मे मिठास प्रदान करने के लिए ऊँ ~~शब्द~~ का प्रयोग किया है। उदा. मिठासूँ, बॉसू। इसके साथ-साथ कई लोकोक्तियो तथा मुहावरों का प्रयोग कर चार-चाँद लगाए है। जैसे- पुची अंगुरी न निरसै घीऊ।

इस रचना मे जायसी ने ठेठ अवधी मे पहली वर्षा के लिए 'दंवगंरा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही उन्होंने बिंबात्मकता की भाषा का प्रयोग किया है।

जेठ जरै सब बहै हुवारा, उठै बवण्ड चिठै पहारा
चारिहु पवन सकोरी आगि, लाहि लंका पलंका लागि।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जायसी जी की भाषा मे रतना मिठास है यह सीधा पाठक के हृदय को छूती है वे लिखते है-

यह तन जारौ छार को, कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उडि परौं, कन्त धरैं जह पाँव

इसी भाषा को लेकर शुक्ल जी कहते है- जायसी की भाषा बहुत मधुर है उसका माधुर्य निराला है। वह माधुर्य भाषा का है संस्कृत का नही"

जायसी जी ने तो स्वयं लिखा है-

मुहम्मद कवि यह जोरी सुनावा, सुना सो पीर प्रेम का पावा

जायसी जी के बाद उस्मान की चित्रावली, अनुराग बाँसुरी जी रचनाओं की अवधी नजर आती है।

हम कह सकते है, जायसी जी ने जो अवधी को आसमान पर पहुँचाया। वैसा ही कार्य ब्रज के लिए सूरदास ने किया।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) लोकमंगल की अवधारणा को प्रसारित करने में अवधी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

अर्धमागधी अपभ्रंश से उत्पन्न पूर्वी हिन्दी उपभाषा में अवधी न केवल लोकभाषा तथा लोकसंस्कृति को समेटती है उसके साथ ही लोकमंगल की अवधारणा को भी प्रसारित करती है।

शुक्ल जी की लोकमंगल की सिद्धि तथा लोकमंगल प्रसार के क्रम मे देखे तो अवधी मे प्रेमाख्यानों के विस्तार मे लोकमंगल की अवधारणा के प्रसार में देखा जा सकता है।

लोकमंगल कवि वे ~~होते~~ है जो न केवल आनंद मार्ग की उपलब्धि करवाएँ बल्कि उसके साथ-साथ ~~व~~ पूर्व की पीड़ाओ तथा तत्कालीन समस्याओं को साहित्य का विषय बनाएँ। इसके लिए उदात्त, मर्यादापूर्ण भाषा की आवश्यकता होगी, इसकी पूर्ति अवधी ने कर दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) अवधी न तो ब्रजभाषा की तरह ~~कोमल~~ मृदु, न ही खड़ी बोली की तरह कठोर। अतः इसमें प्रेमाख्यानों को पेश किया जा सकता है।

(ii) अवधी प्रबंध काव्यों की भाषा होने मे सर्वोत्तम है क्योंकि इसमे समेटने की अद्भुत क्षमता होती है।

(iii) अवधी मे इतना लचीलापन था कि इसमे अवध क्षेत्र के ठेठ शब्दों जैसे दंवगरा इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता था।

(iv) अवधी प्रेमाख्यानों के लिए उत्कृष्ट भाषा थी। इसका प्रमाण शुक्ल जी ने दिया। शुक्ल जी कहते है

"जायसी की भाषा बहुत ही मधुर है यह माधुर्य संस्कृत का नही भाषा का माधुर्य है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) अवधी में मर्यादित, उदात्त भाषा में कथ्य को पेश किया जा सकता है।

(vi) जिस प्रकार जायसी ने अपने एक आँख न होने पर लोगो द्वारा मजाक उड़ाने पर लिखा है, वही इस रचना को लोकमंगल के प्रसार मे कालजयी बनाया है वे लिखते है.

फूल मरै तो मरै
बापू न मरै

"मुहम्मद कवि यह जोरि सुनावा, सुना सो पीर प्रेम कर पावा

इस प्रकार हम कह सकते है लोकमंगल की अवधारणा के विकास मे अवधी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation